शोध-सार

हिन्दी की प्रमुख महिला कथाकारों में नासिरा शर्मा का अत्यंत महत्तपूर्ण स्थान है। उनके 'पारिजात' उपन्यास में पारिजात एक वृक्ष का नाम है। वह वृक्ष जो मन की शांति को बढ़ाता तथा व्यक्ति के थकान को कम कर देता है। यहाँ उपन्यास में पारिजात को एक रुपक की तरह से लिया गया है। उपन्यास की शुरुआत केंद्रीय पात्र रोहन के अपने घर इलाहाबाद आने से होती। इलाहाबाद जो गवाह है दो संस्कृतियों के मिलने का, भारत में रोहन युवाओं का एक मात्र चेहरा है। रोहन का पूरा इतिहास इसी संगम में सिमटा हुआ है। वह अपनी जड़ों को खोज़ता हुआ उसकी तलाश में लग जाता है। इसी क्रम में वह अपनी माँ को अकेला छोड़कर विदेश चला जाता है जिससे वह अपने सपनों को पूरा कर सके। रोहन अपने माता-पिता का एक इकलौता संतान है।

रोहन को विदेश में परिवार सहित बसता देखकर उसके माता-पिता एकांकीपन का जीवन जीने लगते हैं। इसी का शिकार शोभा होती है जब रोहन की विदेशी पत्नी उसको जालसाजी में फंसाकर जेल पहुँचा देती है। इसकी मार उसका सारा परिवार झेलता है। वैसे ही रुही अपने पति काज़िम से दूर हो जाती है। पारिजात उपन्यास के माध्यम से नासिरा शर्मा ने संस्कृतिक द्वंद्व को समझने की कोशिश करती हैं। साथ ही वे समाज में स्त्रियों के अंतरसंघर्ष, स्त्री-पुरुष संबंध तथा उनके आंतरिक पहलुओं की गहरी से पड़ताल करती हैं।

नासिरा शर्मा एक सुप्रसिद्ध कथाकार के रूप में जानी जाती हैं। पारिजात उनका एक बहुचर्चित उपन्यास है। पारिजात जिसके कथानक में अभिव्यक्त जीवन जी रहे बहुत से पात्र हैं, इनमें मुख्य रुही, रोहन, शोभा दत्त, फ्हलद दत्त, ऐलेसन, काजिम, अन्ना बुआ आदि विशेष हैं। इनका जीवन अपने पारिवारिक त्रासदी की पीड़ा और दुख-दर्द को झेलता है। रुही अंत में रोहन से शादी करती है, परंतु पारिवारिक त्रासदी से जीवन के सुख को कोई नहीं जी पाता। सभी पात्र एक दूसरे की उम्मीद को पूरा नहीं कर पाते। जब बात रोहन की आती है तो वह अपने पुत्र वियोग से अंदर ही अंदर मरता रहता है। शोभा दत्ता अपने नाती को न पाने तथा रोहन को जेल जाता हुआ देखकर उसे बचाने में लग जाती है। वह अपने इकलौते बेटे को जेल से छुड़ाने में अपनी सारी पूँजी दांव पर लगा देती है। रुही की माँ फिरदौसा जब अपने बेटे को नहीं देख पाती तथा पति मर जाने के बाद उसका जीवन एकांकीपूर्ण रह जाता है। वैसे तो यह पात्रों का त्रासदीपूर्ण जीवन सम्पूर्ण उपन्यास में दिखायी देता है।

पहले अध्याय में नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व के साथ-साथ उनके कृतित्व को दिखाया गया है। उनके जीवन से संबंधित जो-जो घटनाएँ घटती हैं उसको पात्रों के माध्यम से दिखाया जाता है। उन्होंने अपने जीवन के विविध आयाम के संघर्षो के साथ लेखनी चलाई है। नारी के मुद्दे पर बिना किसी की परवाह किए उनकी समस्या पर बिना किसी पूर्वाग्रह के लिखती हैं। वे उनके साथ हो रहे अत्याचार को सजगता से बयान करती हैं। स्त्री-विमर्श पर उनके अनेक कथानक मिलते हैं। जिसमें दम तोड़ती अनेक अधिकतर नारी पात्र ही विद्यमान हैं। उनके उपन्यासों में अनेक स्त्री जीवन से जुड़ी समस्यों को रेखांकित किया गया है। अधिकतर वह नारी को केंद्र में रखकर कथानक लिखती हैं। उनके उपन्यासों के नारी पात्रों से ज्यादा पुरुष पात्र सवाल उठाते हैं। यह यथार्थ के एक स्वरूप को पैदा कर देती है। उनके उपन्यासों के स्त्री पात्रों को अनेक विसंगतियो से जीना पड़ता है। इससें कहीं अधिक नारी के शोषण की समस्या को उजागर करता है। पारिजात उपन्यास के सभी स्त्री पात्र इस समस्या का शिकार होती हैं जिनमें एकाकी जीवन, पारिवारिक त्रासदी, हिन्दू-मुस्लिम भेद-भाव को भी इस उपन्यास के माध्यम से देखा जा सकता है।

दूसरे अध्याय में पाश्चात्य जगत में स्त्री-संघर्ष को फ्रांस की क्रांति के साथ दिखाया गया है। इसमें भारत की स्त्री संघर्ष को भी दिखाया गया है। इसमें वर्तमान समय की नारी जीवन के अधिकारों के लिए राजा राम मोहन और मध्यकाल के सुधारकों के आलोक में देखा गया है। इसके अंतर्गत सती प्रथा, दहेज प्रथा, विधवा विवाह प्रथा, बाल विवाह के अनेक संघर्षों को अस्मिता की खोज से जूझते हुए दिखाया गया है। नारी के अधिकारों को इसमें महिला संघर्षों के विभिन्न परिणामों के साथ दिखाया गया है। वर्तमान में नारी अस्मिता तथा उनके समय के पारिवारिक परिस्थितियों को भी भूमंडलीकरण के साथ दिखाया गया है। आधुनिक समय में वर्तमान समय की नारी और उसके जीवन-यथार्थ को प्रस्तुत उपन्यास में दिखाया गया है।

तीसरे अध्याय में स्त्री अस्मिता के साथ उसके संघर्षों को दिखाया है। अपने जीवन में पारिवारिक समस्या के साथ जी रही नारी अब जीवन की सच्चाई के साथ जीती है। पारिवारिक जीवन में पैदा हुई स्त्री समाज के अनुसार एक कठपुटली बनकर रह जाती है। उसकी जीवन की त्रासदी को वह उन्माद के साथ जीता है। मुस्लिम महिला के इस वियोग को नारी ने समाज के साथ ही जिया है। अपनी इच्छाओं का हनन उनको ही करना पड़ता है। पैदा हुए इस समाज में नारी की जीवन स्थिति रुही, शोभा दत्त, ऐलेसन, फिरदौश जहाँ के माध्यम से भली भांति देखा जा सकता है।

जब वह अंत की ओर बढ़ता है तो पारिजात की खोज ही पारिजात की मार्मिकता को दुगुना बढ़ा देता है। क्योंकि सम्पूर्ण कहानी में एक तरफ तो एकाकीपन है दूसरी तरफ दुख का बादल नज़र आता है। कोई ना कोई पात्र अपने दुख से दुखी है। परंतु समाज के लिए यह दुख को भी वह स्वीकार कर लेता है। एक विधवा जीवन गुजारती पत्नी का दुख उसके जीवन को त्रासदी से भर देता है। संतान का ना पैदा होना तथा अपने यौवन को बचाये रखने के लिए वह मजबूर होती है। ज़िंदगी उसको यह मोड़ देगी उसको पता नहीं चला। नासिरा शर्मा के जीवन काल को देखा जाए तो वह अपने उपन्यासों के साथ अपने स्त्री पात्रों के साथ भी न्याय करती हैं। उसके संघर्ष को देखते हुए वह महिलाओं के मुद्दों पर गहराई से विचार भी करती हैं। जैसा कि उनके उपन्यास में पाया गया है। 'पारिजात' कुछ इसी प्रकार की भारतीय नारी की छवि का चित्रण करता है। वृक्ष कथा में दो संस्कृतियों के संगम की बहुत सी विशेषतओं को बताया गया है। चाहे वह इलाहाबाद का बसंत का मेला हो या लखनऊ के दशहरे की झाँकी, सब कुछ एक धार्मिक और समुदाय विशेष से न जुड़कर मानव और संस्कृति के मेल से जुड़ते हैं। इसमें वाजिद अली शाह जैसे लोगों ने संगम के सही अर्थ को संजोया है।।

चौथे अध्याय में पारिजात के भाषा शिल्प को भी इस उपन्यास के मध्याम से जाना जा सकता है। इसकी भाषा में हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू फारसी शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग किया गया है। विभिन्न भाषाओं के शब्दों के प्रयोग से वे सम्पूर्ण उपन्यास में भाषाई संस्कृति को बढ़ावा देती हुई दिखाई देती हैं। इसमें उर्दू-फारसी शब्दों मुहावरे व लोकोक्तियाँ का भी बहुतया प्रयोग किया गया है। इसमें उर्दू शब्दों के माध्यम से परिवेश के अनुसार मार्मिकता हो बढ़ाया गया है।

उपसंहार के रूप में सम्पूर्ण शोध का सार प्रस्तुत किया गया है जिसके अंतर्गत पारिजात के स्त्री संघर्ष को उनकी अस्मिता, परिवेश के साथ-साथ उनकी अभिव्यक्ति और अनेक संघर्षों को दिखाया गया है। उपन्यास के पात्र वैवाहिक जीवन के साथ हो रहे एकांकीपन के साथ जी रहे हैं। इसमें उनके जीवन की त्रासदी को पारिवारिक, सामाजिक के साथ-साथ हिन्दू- मुस्लिम परिवेश को भी अभियक्त किया गया है। नारी केवल नारी बन कर रह जाती है। रुही, रोहन जैसे पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट रूप से जाना जा सकता है। समाज में हो रहे उनके जीवन व तलाक लेने के बाद किस तरह आदमी अकेला पड़ जाता है। तलाक के बाद उसका जीवन किस तरह सूनापन रह जाता है यह नारी ही बयान कर सकती है। यहाँ पर बच्चों के साथ आए अलगाव को पारिवारिक समस्या के साथ भी अभिव्यक्त किया गया हैं। स्त्री का

शोषण समाज की प्रत्येक जाति, वर्ण, धर्म, आदि में व्यवस्था के पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, सभी पहलुओं में देखने को मिलता है। स्त्रियों के साथ शोषण का वह स्वरूप जो पहले से ही व्याप्त था अब परिस्थिति के अनुसार और अधिक सूक्ष्म होता जा रहा है। स्त्री शोषण के सूक्ष्म धागे से बनी सामाजिक व्यवस्था को इस उपन्यास में बहुत ही स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।